1960G Nonviolence in the Jain Agam

Ahimsa Parmodharmah (In Sanmati Sandesh, December 1960)

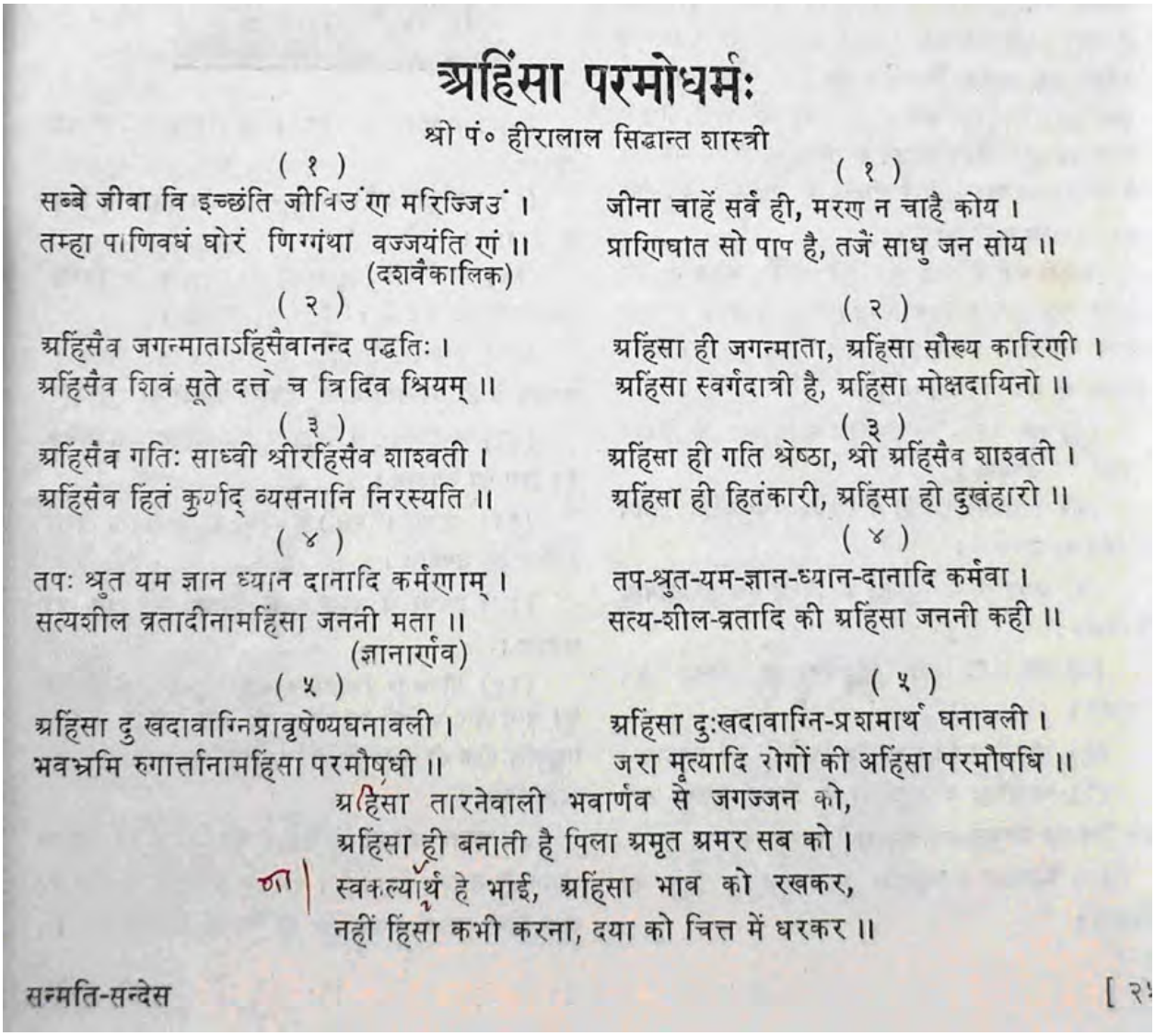

अहिंसा परमोधर्मः

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री

(१)

सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं ण मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवधं घोरं णिग्गंथा वज्जयंति णं ॥
(दशवैकालिक)

(१)

जीना चाहें सर्व ही, मरण न चाहै कोय ।
प्राणिघात सो पाप है, तजें साधु जन सोय ॥

(२)

अहिंसैव जगन्माताऽहिंसैवानन्द पद्धतिः ।
अहिंसैव शिवं सूते दत्ते च त्रिदिव श्रियम् ॥

(२)

अहिंसा ही जगन्माता, अहिंसा सौख्य कारिणी ।
अहिंसा स्वर्गदात्री है, अहिंसा मोक्षदायिनो ॥

(३)

अहिंसैव गतिः साध्वी श्रीरहिंसैव शाश्वती ।
अहिंसैव हितं कुर्याद् व्यसनानि निरस्यति ॥

(३)

अहिंसा ही गति श्रेष्ठा, श्री अहिंसैव शाश्वती ।
अहिंसा ही हितंकारी, अहिंसा हो दुखंहारी ॥

(४)

तपः श्रुत यम ज्ञान ध्यान दानादि कर्मणाम् ।
सत्यशील व्रतादीनामहिंसा जननी मता ॥
(ज्ञानार्णव)

(४)

तप-श्रुत-यम-ज्ञान-ध्यान-दानादि कर्मवा ।
सत्य-शील-व्रतादि की अहिंसा जननी कही ॥

(५)

अहिंसा दु खदावाग्निप्रावृषेण्यघनावली ।
भवभ्रमि रुगार्त्तानामहिंसा परमौषधी ॥

(५)

अहिंसा दुःखदावाग्नि-प्रशमार्थ घनावली ।
जरा मृत्यादि रोगों की अहिंसा परमौषधि ॥

अहिंसा तारनेवाली भवार्णव से जगज्जन को,
अहिंसा ही बनाती है पिला अमृत अमर सब को ।
स्वकल्यार्थ हे भाई, अहिंसा भाव को रखकर,
नहीं हिंसा कभी करना, दया को चित्त में धरकर ॥